प्रबंधन प्रवेश परीक्षाएं
पैटर्न और तैयारी की रणनीति

विजय प्रकाश श्रीवास्तव

पोस्ट ग्रेजुएट (स्नातकोत्तर) योग्यता के लिए पिछले कुछ वर्षों के दौरान प्रबंधन में मास्टर डिग्री या पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कई विद्यार्थियों के लिए प्राथमिक पसंद बन गया है. इसके पीछे कई कारण हैं. किसी भी विषय से स्नातक प्रबंधन पाठ्यक्रम का चुनाव कर सकता है. दो वर्ष के दौरान पूरा होने वाला यह पाठ्यक्रम बहुत लंबा नहीं है. इसमें विशेषज्ञता के लिए चयन विकल्प हैं और प्रबंधन शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थानों की बहुलता है. इसके अलावा रोज़गार बाजार में प्रबंधन योग्यता का अपेक्षाकृत अधिक महत्व है. ऐसे कई पाठ्यक्रमों के विकल्प नीचे दिए गए हैं:

एमबीए- मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन
एमबीएम - मास्टर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट
एमएमएस - मास्टर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज़
पीजीडीएम - पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट

कई विषयों में मास्टर डिग्री लेना तभी संभव होता है, यदि आपने स्नातक स्तर की क्वालिफाइंग परीक्षा में अच्छे अंक हासिल किए हैं. प्रबंधन के साथ ऐसा नहीं है. यहां आपको एप्टीट्यूड टैस्ट देना होता है, जो इस बात की जांच के लिए होता है, कि उम्मीदवार में प्रबंधन के अध्ययन और एक अच्छा प्रबंधक बनने की योग्यता और रुचि है या नहीं. इसके लिए पहले लिखित परीक्षा होती है, अधिकांशतः यह परीक्षा ऑनलाइन ली जाती है, इसके बाद ग्रुप डिस्कशन और इंटरव्यू होता है.

प्रबंधन में पोस्ट ग्रेजुएट करने वाले सभी इच्छुक विद्यार्थियों को पहले इस बात को लेकर स्पष्ट होना चाहिए कि वे कहां से यह पाठ्यक्रम करना चाहते हैं, इसी के अनुसार उन्हें विशेष प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन करना होगा और इसकी तैयारी करनी होगी.

सामान्य प्रवेश परीक्षा यानी कैट सबसे अधिक प्रचलित परीक्षा है, जो विभिन्न भारतीय प्रबंधन संस्थानों में प्रवेश के लिए ली जाती है. हालांकि इन प्रबंधन संस्थानों के अलावा अन्य कई संस्थान भी कैट के स्कोर के आधार पर उम्मीदवारों का चयन करते हैं.

इसके बाद प्रचलित परीक्षाएं हैं - अखिल भारतीय प्रबंधन संघ, नई दिल्ली से संचालित प्रबंधन अभिरुचि परीक्षा यानी मैट और भारतीय प्रबंधन स्कूल संघ, मुख्यालय हैदराबाद से ली जाने वाली प्रबंधन प्रवेश के लिए एआईएमएस परीक्षा (आत्मा).

कई राज्य अपने विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों द्वारा संचालित प्रबंधन पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए केंद्रीकृत परीक्षा अपने संबंधित संस्थानों के माध्यम से लेते हैं. उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में एमएच-सीईटी का संचालन सरकार का तकनीकी शिक्षा निदेशालय (डीटीई) करता है. संबंधित वेबसाइटों पर उन विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों की सूची उपलब्ध है, जो परीक्षा विशेष के अंक स्वीकार करते हैं. इनके अलावा अन्य कई संस्थान हैं, जो अपनी प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन करते हैं, कुछ मामलों में ये कैट/अन्य परीक्षाओं के परिणाम भी स्वीकार करते हैं. ऐसी कुछ परीक्षाएं* हैं:

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ फारेन ट्रेड (भारतीय विदेश व्यापार संस्थान), एमबीए (अंतर्राष्ट्रीय व्यापार)
ज़ेवियर एप्टिट्यूड टैस्ट (एक्सएटी)
सिम्बियोसिस नेशनल एप्टिट्यूड (स्नैप) टैस्ट
ग्रेजुएट मैनेजमेंट एडमिशन काउंसिल (स्नातक प्रबंधन प्रवेश परिषद-जीएमएसी) द्वारा एन-मैट.
राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी द्वारा सामान्य प्रबंधन प्रवेश परीक्षा (सीएमएटी)
टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल सांइसेज़ के पाठ्यक्रम के लिए - टिस नेट.
मुद्रा इंस्टिट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन, अहमदाबाद के पाठ्यक्रमों के लिए एमआईसीएटी.
इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल मैनेजेंट, आणंद में प्रवेश के लिए चुने गए उम्मीदवारों के लिए आईआरएमएएसएटी.

(*सांकेतिक सूची)

प्रबंधकों को काम में तीव्र, सटीक, तार्किक और अच्छा संपर्ककर्ता और संवादक होना चाहिए. प्रबंधन परीक्षाओं का उद्देश्य इन योग्यताओं की जांच करना होता है. कुल मिलाकर ऊपर लिखित सभी परीक्षाओं में प्रश्न के ऐसे खंड शामिल होते हैं, जो उम्मीदवार में इन योग्यताओं की परख कर सकें. सभी परीक्षाएं नाम से अलग होने के बावजूद कुल मिला कर लगभग समान होती हैं. सभी परीक्षाओं में कुछ कठिन अंश होते हैं, जिनका स्तर विभिन्न परीक्षाओं में अलग-अलग हो सकता है. परीक्षा की तैयारी के समय यही अंश आपको व्यस्त रखता है और निश्चित नहीं होने देता. किसी भी परीक्षा में कठिन अंश का स्तर चाहे कम हो या अधिक, यह सभी के लिए बराबर होता है और क्वालिफाई करने के लिए आपको मेरिट में आना होता है यानी अपनी योग्यता सबसे ऊपर निर्धारित करनी होती है. इसलिए लक्ष्य अधिक से अधिक अंक हासिल करना होना चाहिए. आमतौर पर एक प्रबंधन प्रवेश परीक्षा में निम्नलिखित खंड होते हैं:

सामान्य अंग्रेजी: चूंकि भारत के सभी बिजनेस स्कूलों में शिक्षा और अनुदेश का माध्यम अंग्रेजी है, इसलिए विद्यार्थियों की अंग्रेजी भाषा की जानकारी की परख की जाती है. सामान्य अंग्रेजी का यह खंड बाद में पठन ज्ञान (रीडिंग कम्प्रीहेंशन) और मौखिक तार्किक क्षमता (वर्बल रीज़निंग), मौखिक क्षमता (वर्बल एबिलिटी) इत्यादि में विभाजित हो जाता है. दिए गए उद्धरण के आधार पर उम्मीदवार को कुछ प्रश्नों के जवाब देने को कहा जाएगा. ये निष्कर्ष निकालने, वक्तव्य मिलाने, समानार्थी या विपरीतार्थक शब्द चयन से संबंधित हो सकते हैं. ऐसे भी प्रश्न हो सकते हैं, जिनमें वाक्य असंगत अंशों में दिया गया हो और परीक्षार्थी से इन्हें संगत रूप में व्यवस्थित करने को कहा जाएगा, जिससे वाक्य का समुचित अर्थ निकलता हो. वाक्यों पर आधारित अन्य प्रश्नों में परीक्षार्थी को यह भी निकालना होता है कि वाक्य के किस हिस्से में त्रुटि है या फिर कहीं कोई त्रुटि नहीं है.

विश्लेषणात्मक तार्किक शक्ति (एनालिटिकल रीज़निंग) - एनालिटिकल रीज़निंग के प्रश्न पहेली की तरह होते हैं. यदि आप इस पहेली को समझ लेते हैं, तो संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं. चुनौती होती है, दी गई सूचना से सभी उत्तरों की तलाश करना, जो कि गडमड रूप में दिया गया हो सकता है. इसके अलावा कुछ ऐसी जानकारी भी दी गई होती है, जो अनावश्यक है और आपको यह निश्चित होना होता है कि यह अनावश्यक सूचना आपको भ्रम में न डाले. ऐसे भी प्रश्न हो सकते हैं, जिनमें विविध स्थितियों का उल्लेख होता है और आपको सही उत्तर देने के लिए इन्हें सही क्रम में रखना होता है.

लॉजिकल रीज़निंग - लॉजिकल रीज़निंग की परीक्षा उम्मीदवारों से यह अपेक्षा करती है कि वे दी गई जानकारी का सही आकलन करें और अर्थ, संबंध और पैटर्न के आधार पर सही निष्कर्ष निकालें. इस खंड के प्रश्न अधिकांशतः व्यवस्था क्रम पर आधारित होते हैं, जिनमें कुछ निश्चित शर्तें पूरी करनी होती हैं. ये बैठने की व्यवस्था, रैंक, टीम तैयार करने, रक्त संबंध, निर्देश शक्ति, घड़ी और कैलेंडर, न्यायिक तर्क, अनुमान से संबंधित होते हैं.

क्वांटिटेटिव एप्टीट्यूड - इस खंड की परीक्षा का उद्देश्य मूल रूप से परीक्षार्थी के गणितीय ज्ञान की परख करना है. सवाल गणित, बीज गणित या ज्यामिति इत्यादि से संबंधित हो सकते हैं. इस खंड में गति/समय/दूरी, कार्य/लोगों की संख्या, प्रतिशत, औसत, क्षेत्रफल, व्यास/त्रिज्या, ब्याज गणना, लाभ/हानि/छूट, अनुपात/समानुपात/वेरिएशन, प्रोग्रेशन और सीरीज़, मिक्सचर/एलिगेशन, संभाव्यता, संख्या प्रणाली से संबंधित गणितीय प्रश्न हो सकते हैं. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आपने गणित पाठ्यक्रम में जो कुछ भी पढ़ा है, सवाल उसी पर आधारित होते हैं.

डेटा इंटरप्रिटेशन - आपने समाचार पत्रों में टेबल और ग्राफ देखे होंगे, जिनका उद्देश्य अर्थव्यवस्था, समाज इत्यादि से संबंधित कुछ तथ्यों को सामने लाना होता है. डेटा की व्याख्या और विश्लेषण से विशेष रूझानों को समझा जा सकता है. डेटा इंटरप्रिटेशन से संबंधित सवालों में आपको प्रश्न की अपेक्षा अनुरूप निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए दिए गए आंकड़ों पर अपेक्षित प्रक्रिया लागू करनी होती है. आंकड़े विविध प्रारूपों में जैसे चार्ट, तालिका, ग्राफ, पाईचार्ट इत्यादि में प्रस्तुत किए जा सकते हैं. उदाहरण के लिए बार ग्राफ में बार की ऊंचाई/लम्बाई उस आंकड़े के अनुपात में होनी चाहिए, जिसका वे प्रतिनिधित्व कर रहे हैं. इन बारों की तुलना से यह मालूम किया जा सकता है कि किस वर्ष में उत्पादन या बिक्री या प्रश्न से संबंधित अन्य कोई अपेक्षा अधिक रही या कम रही और किस परिमाण में अधिक या कम रही.

डेटा पर्याप्तता - महत्वपूर्ण परिस्थितियों में वस्तुनिष्ठ निर्णय के लिए कुछ संबंधित तथ्यों पर विचार करना जरूरी होता है. डेटा पर्याप्तता से संबंधित सवालों में, काल्पनिक परिस्थितियों के लिए, दो या तीन वक्तव्य दिए जाएंगे. परीक्षार्थी को यह बताना होगा कि किसी एक या अधिक वक्तव्यों में दिए गए तथ्य (किसी भी रूप में) प्रश्न के उत्तर के लिए या परिस्थिति को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं या नहीं. इसी प्रकार दिए गए तथ्यों के आधार पर आपको यह मालूम करना होगा कि सही निष्कर्ष के लिए किस का अनुसरण करना है, किसका नहीं.

डेटा सफिशिएंसी टेस्ट में दिए जाने वाले प्रश्नों के ये केवल कुछ उदाहरण मात्र हैं.

सामान्य जागरूकता (जनरल अवेयरनेस) - अनेक प्रबंधन प्रवेश परीक्षाओं में सामान्य जागरूकता से संबंधित प्रश्नों को 15 से 25 प्रतिशत वेटेज दिया जाता है. इस खंड की आपकी तैयारी आपको ग्रुप डिस्कशन और इंटरव्यू में भी सहयोग करेगी. प्रश्न हाल के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय और राजनीतिक घटनाक्रम, खेल कूद, अर्थव्यवस्था, कृषि, वैश्विक सम्मेलन, भारतीय संविधान, पर्यावरण और शैक्षणिक मुद्दे, पुस्तकें/लेखक, कंपनी की लोगो पहचान, विभिन्न देशों की पूंजी/मुद्रा, संयुक्त राष्ट्र और इसकी विभिन्न एजेंसियों से जुड़े हो सकते हैं.

चरणबद्ध तैयारी - 2020-21 के सत्र में प्रबंधन पाठ्यक्रम लेने के इच्छुक विद्यार्थियों ने अपनी तैयारी शुरू कर दी है. यह तैयारी प्रणालीबद्ध ढंग से नियोजित और केंद्रित होनी चाहिए. जो भी परीक्षा आप देना चाहते हों, आपको उसके पैटर्न की अच्छी तरह जानकारी होनी चाहिए. यह तैयारी का पहला चरण होगा. दूसरा चरण होगा यह आकलन करना कि परीक्षा देने की आपकी क्षमता का स्तर क्या है. कुछ विषय ऐसे हो सकते हैं, जिनमें आप काफी मजबूत हों और कुछ विषय ऐसे होंगे, जिनमें आप कमजोर होंगे. आपको एक शेड्यूल बनाना होगा कि किन खंडों को अधिक समय दिया जाना है, जिनमें आपको अधिक तैयारी की जरूरत है.

अच्छी तैयारी के लिए आपको संसाधनों की आवश्यकता होगी. संसाधनों से हमारा अभिप्रायः वो सामग्री है, जिसका उपयोग आप तैयारी के लिए करेंगे. इन संसाधनों पर अधिक पैसे खर्च करने की आवश्यकता नहीं है. आपको केवल एक या दो प्रबंधन प्रवेश परीक्षा गाइड खरीदनी होंगी, जिनमें नमूना प्रश्नपत्र हों और सवालों को हल करने की रणनीति भी सुझाई गई हो. मॉडल/नमूना/पिछले वर्ष के प्रश्नपत्रों के लिए आपको नियमित रूप से परीक्षा संचालित करने वाली वेबसाइट पर नजर रखनी होगी. सही दिशा में तैयारी जारी रखने के लिए आपको संसाधनों के रूप में प्राप्त सामग्री का सतर्कता पूर्वक अध्ययन करना होगा. कई वेबसाइट पर आपको कृत्रिम (मॉक) परीक्षा में शामिल होने का मौका भी उपलब्ध कराया जाता है.

मॉक परीक्षा इन्हें उपलब्ध कराने वाली वेबसाइटों और अध्ययन पुस्तकों के जरिए ली जा सकती है. वास्तव में ऐसी अनेक वेबसाइट हैं, जो आपको संबंधित परीक्षा की रूपरेखा, पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों की शैली का विश्लेषण और परीक्षा में सफलता के लिए मार्गदर्शन देंगे. प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों से सफलता पाने वाले कई विद्यार्थी भी अपने अनुभव और अपनी रणनीति अन्य परीक्षार्थियों के हित में साझा करते हैं.

नमूना प्रश्नपत्र प्रतियोगिता पत्रिकाओं में भी मिल सकते हैं. इन पत्रिकाओं के केवल ताजा अंकों पर निर्भर न रहें, पिछले अंकों का अध्ययन भी आपको नमूना प्रश्नपत्रों और पिछले परीक्षा पत्रों से आपको फायदा पहुंचाएगा.

वर्कबुक के रूप में संसाधन अभ्यास के लिए अधिक से अधिक उपयोग में लिए जाने चाहिएं.

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी ने देश के विभिन्न स्थानों पर परीक्षा अभ्यास केंद्र खोले हैं. परीक्षार्थी यहां से कम्प्यूटर आधारित परीक्षा का अनुभव ले सकते हैं और अभ्यास कर सकते हैं. इन केंद्रों में उम्मीदवारों को समुचित मार्गदर्शन देने के लिए अनुभवी लोग होते हैं. ये विद्यार्थियों को सी-मैट और अन्य परीक्षाओं से अवगत कराते हैं.

क्वांटिटेटिव एप्टीट्यूड के लिए आपको गणित के बुनियादी सिद्धांतों की जानकारी अद्यतन करनी होगी. इसके लिए माध्यमिक स्कूल परीक्षा की गणित पुस्तक के पाठ्यक्रम को दोहराना होगा. आपको अनुपात, सरल और चक्रवृद्धि ब्याज, औसत, मध्यमान यानी मीन, मीडियन और मोड निकालने में सक्षम होना चाहिए.

तार्किक प्रश्नों में सफलता के लिए आपको यह आकलन करना होगा कि आप प्रश्नों के पैटर्न को लेकर तार्किक क्रम में सोच सकते हैं या नहीं. अपेक्षित तार्किक क्षमता विकसित करने के लिए ऐसे प्रश्न नियमित रूप से हल किए जाने चाहिएं. इससे तार्किक प्रश्नों को हल करना आसान होता जाएगा. बेहतर होगा कि इन प्रश्नों को मानसिक रूप से हल करने की बजाए आप आरंभ में रफ पेपर पर इन प्रश्नों को हल करें और इसके बाद उत्तर को चिह्नित करें.

सामान्य अध्ययन के लिए आपको एक अच्छी इयरबुक का नवीनतम संस्करण रखना होगा. ऐसे इयरबुक उचित मूल्य पर मिल जाते हैं. इसके अलावा आपको कम से कम एक राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र नियमित रूप से पढ़ने की आदत डालनी होगी. आपकी आगामी परीक्षा के दृष्टिकोण से जो कुछ भी महत्वपूर्ण लगे, उसे नोट कर लिया जाना चाहिए. ऑनलाइन समाचार पत्र भी पढ़े जाने चाहिएं क्योंकि इनमें से अधिकांश निःशुल्क उपलब्ध हैं.

अंग्रेजी खंड की भी समुचित तैयारी होनी चाहिए. केवल इंग्लिश मीडियम से पढ़े होने का अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि आप अंग्रेजी परीक्षा में सफलता के लिए पूरी तरह तैयार हैं. नमूना प्रश्नपत्र हल किए जाने चाहिएं और अपनी प्रस्तुति का आकलन किया जाना चाहिए कि आपको कहां अधिक तैयारी की जरूरत है. हो सकता है कि आपकी शब्दावली जानकारी या व्याकरण कमजोर हो. ऐसी स्थिति में आपको अपनी तैयारी बढ़ाने और कमजोरी को दुरुस्त करने की जरूरत है.

डेटा इंटरप्रिटेशन में आप में से अधिकांश को अधिक तैयारी की जरूरत होगी, क्योंकि यह हमारे नियमित पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है. यदि आप गहराई से इसका अध्ययन करेंगे तो पाएंगे कि उत्तर देना काफी आसान है, क्योंकि संबंधित आंकड़े आपके सामने हैं और आपको केवल निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए आंकड़ों की तुलना करने या विश्लेषण करने की जरूरत है. इस खंड में संभावित सभी प्रकार के प्रश्नों की तैयारी की जानी चाहिए.

डेटा पर्याप्तता से जुड़े प्रश्नों को हल करते समय कुछ मामलों में अंत से शुरुआत करना बेहतर रहेगा. उदाहरण के लिए यदि आपको कोई ऐसा प्रश्न हल करना है, जिसमें यह मालूम करना है कि किसी विकल्प विशेष में दिया गया डेटा पर्याप्त है या नहीं, ऐसे में आपको यह आकलन करना होगा कि संबंधित आंकड़े की न्यूनतम अपेक्षा क्या है और इसके बाद विकल्प को इसके साथ मैच करना होगा.

लगभग सभी प्रबंधन प्रवेश परीक्षाओं में गलत उत्तर के लिए नकारात्मक अंक देने की व्यवस्था लागू होती है. आमतौर पर यह प्रश्न विशेष के लिए आवंटित अंक का एक चौथाई होता है. उदाहरण के लिए एन-मैट में प्रत्येक प्रश्न 4 अंक का होता है और प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1 अंक काटा जाता है. प्रश्न के उत्तर को लेकर कोई अंदाजा लगाते समय यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए.

आपके द्वारा प्राप्त अंकों के आधार पर किसी भी संस्थान से प्रवेश का प्रस्ताव मिलने का अर्थ यह नहीं है कि आप वहां प्रवेश लेने के लिए दौड़ पड़ें. पहले आप उस संस्थान की विश्वसनीयता से संबंधित सभी परख कर लें. अच्छे नहीं माने जाने वाले कुछ संस्थान काफी पहले अपनी सीटें भर लेना चाहते हैं. इसे लेकर आपको सतर्कता बरतनी होगी. यह भी सलाह दी जाती है कि संस्थानों की शुल्क वापसी से संबंधित नीतियों की समुचित जानकारी हासिल कर लें. कई बार उम्मीदवार किसी बेहतर संस्थान में प्रवेश का प्रस्ताव मिलने के बाद पहले लिए गए प्रवेश को रद्द कर देना चाहते हैं.

(लेखक मुंबई स्थित कॅरिअर काउंसलर हैं. ई-मेलः v2j25@ yahoo.in)

व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं.

(चित्रः गूगल के सौजन्य से)